Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPTET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

उ.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा

उच्च प्राथमिक स्तर (विज्ञान वर्ग)

भाग–2(ब)

सामान्य हिन्दी एवं संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

हिन्दी

1. हिन्दी भाषा 1
2. हिन्दी साहित्य 2
3. वर्णमाला 11
4. विराम चिन्ह 18
5. शब्द भेद 19
6. संधि 28
7. समास 37
8. संज्ञा से अव्यय तक 42
9. अलंकार 52
10. रस 58
11. छन्द 63
12. पर्यायवाची शब्द 67
13. विलोम शब्द 69
14. अनेक शब्दो के लिए एक शब्द 71
15. वर्तनी 74
16. प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ 76
17. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 82
18. अवतरण के रचियता 84
19. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2019** 96
20. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2018** 102
21. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2017** 107

- ❖ भाषा अधिगम एवं अर्जन 113
- ❖ भाषा कौशल 119
- ❖ शिक्षक सहायक सामग्री 123
- ❖ उपचारात्मक शिक्षण 124

संस्कृत

1.	वर्ण	125
2.	संधि	135
3.	सुबंत प्रकरण, तिङन्त प्रकरण	156
4.	वाक्य परिवर्तनम	175
5.	उपसर्ग	180
6.	प्रत्यय	182
7.	पर्यायवाची शब्द	187
8.	विलोम शब्द	189
9.	अव्यय प्रकरण	190
10.	समासः प्रकरण	193
11.	अपठित पंद्यांश	201
12.	अपठित गंद्यांश	204

Toppersnotes
Unleash the topper in you

संधि

संधि का शाब्दिक अर्थ है – 'मेल'

– दो वर्णों के मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

[संधि के भेद]

- [स्वर संधि]
  - → दीर्घ सन्धि
  - → गुण सन्धि
  - → वृद्धि सन्धि
  - → यण सन्धि
  - → अयादि सन्धि
- [व्यंजन संधि]
- [विसर्ग संधि]

स्वर सन्धि

① **दीर्घ सन्धि** – यदि ह्रस्व / दीर्घ 'अ' 'इ' 'उ' के पश्चात् क्रमशः ह्रस्व / दीर्घ 'आ' 'ई' 'ऊ' स्वर आएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ 'आ' 'ई' 'ऊ' हो जाते हैं।

जैसे –

मतानुसार	= मत + अनुसार	(अ + अ = आ)
हार्मार्थ	= हार्म + अर्थ	(अ + अ = आ)
रेखांश	= रेखा + अंश	(आ + अ = आ)
महात्मा	= महा + आत्मा	(आ + आ = आ)
गिरीश	= गिरि + ईश	(इ + ई = ई)
भानूदय	= भानु + उदय	(उ + उ = ऊ)
लघूर्मि	= लघु + ऊर्मि	(उ + ऊ = ऊ)
वधूत्सव	= वधू + उत्सव	(ऊ + उ = ऊ)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(२) गुण सन्धि — यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' 'उ' या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए' 'ओ' और 'अर' हो जाते हैं।

जैसे —

अ + इ = ए (नरेन्द्र = नर + इंद्र)
आ + इ = ए (यथेष्ट = यथा + इष्ट)
आ + ई = ए (राकेश = राका + ईश)
आ + उ = ओ (महोत्सव = महा + उत्सव)
अ + उ = ओ (परोपकार = पर + उपकार)
अ + ऊ = ओ (नवोढ़ा = नव + ऊढ़ा)
आ + ऊ = ओ (महोर्मि = महा + ऊर्मि)
अ/आ + ऋ = अर् (महर्षि = महा + ऋषि)

(३) वृद्धि सन्धि — यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' के पश्चात 'ओ' या 'औ' आए, तो दोनों के मेल से 'औ' हो जाता है।

जैसे —

अ/आ + ए/ऐ → ऐ
अ/आ + ओ/औ → औ

अ + ए = ऐ (एकैक = एक + एक)
अ + ऐ = ऐ (मतैक्य = मत + ऐक्य)
आ + ए = ऐ (सदैव = सदा + एव)
अ + ओ = औ (वनौषधि = वन + ओषधि)
आ + औ = औ (महौषध = महा + औषध)
आ + ओ = औ (महौज = महा + ओज)
आ + ऐ = ऐ (महैश्वर्य = महा + ऐश्वर्य)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(4) यण सन्धि – यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो 'इ' और 'ई' का 'य', 'उ' और 'ऊ' का व तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है।

इ / ई + असमान स्वर = य (यद्यपि = यदि + अपि)

उ / ऊ + असमान स्वर = व (स्वच्छ = सु + अच्छ)

ऋ + असमान स्वर = र (मात्राज्ञा = मातृ + आज्ञा)

(5) अयादि संधि – यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' हो जाता है।

जैसे–

ए + अ = अय (नयन = ने + अन)

ऐ + आ = आय (गायक = गै + अक)

ऐ + इ = आयि (नायिका = नै + इका)

ओ + अ = अव (पवन = पो + अन)

ओ + इ = अवि (पवित्र = पो + इत्र)

ओ + ई = अवी (गवीश = गो + ईश)

औ + अ = आव (पावन = पौ + अन)

औ + इ = आवि (नौ + इक = नाविक)

औ + उ = आवु (भावुक = भौ + उक)

Note – इस संधि का प्रयोग केवल संस्कृत में होता है हिन्दी में इन शब्दों की गिनती रूढ़ शब्दों में होती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

व्यंजन संधि

Rule (1) वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

(क् + च् + ट् + त् , प् + स्वर / अंतःस्थ = ग् , ज् , ड् , द् , ब्)

जैसे

1) दिग्गज = दिक् + गज (क् का ग्)
2) अजंत = अच् + अंत (च् का ज्)
3) षडानन = षट् + आनन (ट् का ड्)
4) उद्योग = उत् + योग (त् का द्)
5) अब्ज = अप् + ज (प् का ब्)

Rule (2) ⇒ वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवे वर्ण में परिवर्तन

(क् , च् , ट् , त् , प् + अनुनासिक वर्ण = अनुनासिक ध्वनि)

जैसे –

1) वाङ्मय = वाक् + मय (क् का ङ्)
2) षण्मुख = षट् + मुख (ट् का ण्)
3) उन्मत्त = उत् + मत्त (त् का न् होना)
4) जगन्नाथ = जगत् + नाथ (त् का न्)

Rule (3) = छ संबंधी नियम – किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है।

जैसे – स्वच्छंद = स्व + छंद
परिच्छेद = परि + छेद
विच्छेद = वि + छेद
अनुच्छेद = अनु + छेद

Toppersnotes
Unleash the topper in you

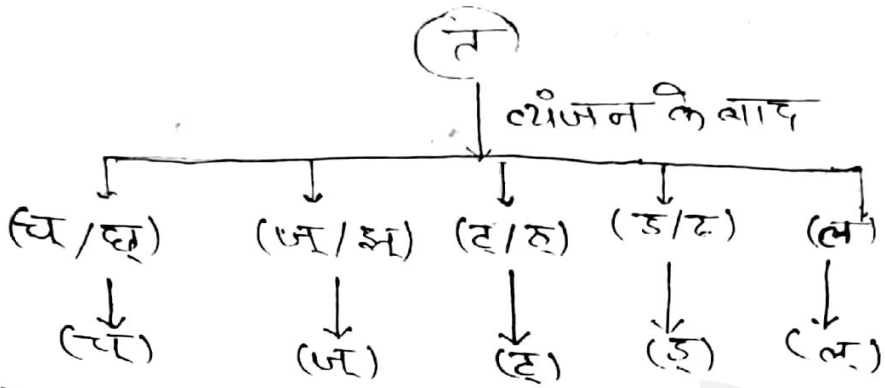

Rule (4) त संबंधी नियम –

⇒ (त) — व्यंजन के बाद

- (च/छ) → (च्)
- (ज/झ) → (ज्)
- (ट/ठ) → (ट्)
- (ड/ढ) → (ड्)
- (ल) → (ल्)

जैसे

उच्चारण = उत् + चारण = (त् का च्)

सज्जन = सत् + जन = (त् का ज्)

उड्डयन = (उत् + डयन) = (त् का ड्)

⇒ (त) के बाद (श) आए

- त् का (च्)
- श का (छ्)

उदा० उच्छ्वास = उत् + श्वास = (त् का च्)

सच्छास्त्र = सत् + शास्त्र = (त् का च्)

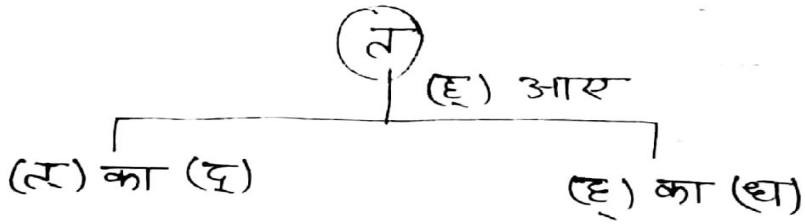

⇒ (त) (ह) आए

- (त्) का (द्)
- (ह्) का (ध)

उदा० उद्धार = उत् + हार

उद्धत = उत् + हत

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Rule (5) यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो न का 'ण' हो जाता है।

उदा०

परिणाम = परि + नाम

रामायण = राम + अयन

प्रमाण = प्र + मान

Rule (6) स संबंधी नियम

– ('स्' का 'ष्') यदि 'स' व्यंजन से पहले कोई भी स्वर आता है तो 'स' का 'ष' हो जाता है।

उदा०

विषम = वि + सम

सुषमा = सु + समा

Rule (7) – म संबंधी नियम

– 'म' के बाद जिस वर्ग का व्यंजन आता है, अनुस्वार उसी वर्ग का नासिक्य (ङ, ञ, ण, न, म) अथवा अनुस्वार बन जाता है।

उदा०

परंतु = परम् + तु

संगति = सम् + गति

संयोग = सम् + योग

संसार = सम् + सार

संहार = सम् + हार

सम्मान = सम् + मान

सम्मति = सम् + मति

Toppersnotes
Unleash the topper in you

विसर्ग सन्धि

Rule (1) – विसर्ग का 'ओ' हो जाता है :
– यदि विसर्ग के पहले 'अ' और बाद में 'अ' अथवा प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व', 'ह' हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है।

उदा०
मनोनुकूल = मनः + अनुकूल
मनोरथ = मनः + रथ
अधोगति = अधः + गति
वयोवृद्ध = वयः + वृद्ध

Rule (2) विसर्ग का 'र' हो जाता है –
– यदि विसर्ग के पहले 'अ' 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में 'आ', 'उ', 'ऊ' या तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई हो तो विसर्ग का 'र' हो जाता है।

उदा०
निराशा = निः + आशा
निर्बल = निः + बल
निर्जन = निः + जन
दुर्जन = दुः + जन
दुरुपयोग = दुः + उपयोग
बहिर्मुख = बहिः + मुख
दुरूह = दुः + ऊह
दुर्बल = दुः बल
निर्धन = निः + धन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Rule (3) = विसर्ग का श, ष, स हो जाता है—

उदाहरण - यदि विसर्ग के बाद 'च/छ' व्यंजन हो तो विसर्ग का 'श', ट/ठ व्यंजन हो तो, 'ष' तथा त/थ व्यंजन हो तो 'स' हो जाता है।

उदा०
निश्चल = निः + चल
निश्चय = निः + चय
निष्ठुर = निः + ठुर
निस्तेज = निः + तेज

Rule (4) = विसर्ग का लोप हो जाना—

(i) यदि विसर्ग के आगे 'र' व्यंजन आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसके पहले का ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

उदा०
नीरोग = निः + रोग
नीरज = निः + रज
नीरस = निः + रस
नीरव = निः + रव

Rule (5) = विसर्ग में कोई परिवर्तन न होना—

-यदि विसर्ग के बाद 'श/ष/स' में से कोई व्यंजन आए तो विसर्ग अपने स्थान पर बना रहता है।

उदाहरण
दुःशासन = दुः + शासन
निःसंदेह = निः + संदेह
दुस्साहस = दुः + साहस
निसंग = निः + संग
प्रातःकाल = प्रातः + काल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अपवाद →

- नमः एवं पुरः में विसर्ग का स् हो जाता है।
जैसे -

नमस्कार = नमः + कार
पुरस्कार = पुरः + कार

कुछ महत्वपूर्ण संधियाँ

संविधान - सम् + विधान
उन्नति - उत् + नति
स्वेच्छा - स्व + इच्छा
मनोहर - मनः + हर
जगदीश - जगत् + ईश
संस्कृति - सम् + कृति
मनोविज्ञान - मनः + विज्ञान
सदाचार - सत् + आचार
संतोष - सम् + तोष
रमेश - रमा + ईश
स्वागत - सु + आगत
उच्चारण - उत् + चारण
इत्यादि - इति + आदि
युधिष्ठिर - युधि + स्थिर
संसार - सम् + सार
महौज - महा + ओज
मानवेतर - मानव + इतर

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वचन

वचन विशेष संख्या बोध का शब्द कहलाता है। अथवा शब्दों के, जिस रूप में एक या एक से अधिक संख्या का बोध होता है। उसे वचन कहते हैं।

उदा० 1. बालकः पठति।
2. बालकः पठन्ति।

वचन के भेद – संस्कृत में तीन वचन होते हैं।

1. एकवचन
2. द्विवचन
3. बहुवचन

(1) एकवचन ⇒ संज्ञा के जिस रूप से किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं।
जैसे – छात्रः, बालकः, वृक्षः, बच्चाः, लड़की।

(2) द्विवचन ⇒ जिस शब्द से दो वस्तुओं का बोध होता है। उसे द्विवचन कहते हैं।
जैसे = छात्राः, बालकाः, वृक्षः, बच्चाः, लड़की।

(3) बहुवचन ⇒ संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं।
जैसे – पुस्तकानि, कवयः, मानवः, लताः, छात्राः, बालकाः आदि

अपूर्ण संख्यावाची शब्द

1. एक:
2. द्वौ / द्वे
3. त्रय: / तिस्र: / त्रीणि
4. चत्वार: / चतस्र: / चत्वारि
5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. ऊनविंशति: / एकोनविंशति:
20. विंशति:
21. एकविंशति:
22. द्वाविंशति:
23. त्रयोविंशति:
24. चतुर्विंशति:
25. पंचविंशति:
26. षड्विंशति:
27. सप्तविंशति:
28. अष्टाविंशत:
29. ऊनत्रिंशत् / एकोनत्रिंशत्
30. त्रिंशत्
31. द्वात्रिंशत्
32. त्रयस्त्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टत्रिंशत्
39. ऊनचत्वारिंशत्
40. चत्वारिंशत्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

41. एकचात्वारिंशत्
42. द्विचात्वारिंशत्
43. त्रि चात्वारिंशत्
44. चतुश्चात्वारिंशत्
45. पंच चत्वारिंशत्
46. षट् चात्वारिंशत्
47. सप्त चत्वारिंशत्
48. अष्ट चत्वारिंशत्
49. ~~ऊन~~ नव चत्वारिंशत्
50. पंचाशत्
51. एक पंचाशत्
52. द्वि पंचाशत्
53. त्रि पंचाशत्
54. चतुः पंचाशत्
55. पंच पंचाशत्
56. षट् पंचाशत्
57. सप्त पंचाशत्
58. अष्ट पँचाशत्
59. ऊनषष्टिः | एकोनषष्टिः
60. षष्टिः
61. एक षष्टिः
62. द्वि
63. त्रि
64. चतुः
65. पंच
66. षट्
67. सप्त
68. अष्ट
69. एकोनसप्ततिः
70. सप्ततिः
71. एक
72. द्वि
73. त्रि
74. चतुः
75. पंच
76. षट्
77. सप्त
78. अष्ट
79. नव सप्ततिः | ऊनाशीतिः | एकोनाशीतिः
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्वयाशीतिः
83. ~~द्वि~~ त्र्यशीतिः
84. चतुरशीतिः
85. पंचाशीतिः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

86 षडशीतिः — 1000 सहस्रम
87 सप्ताशीतिः — 10000 - अयुतम
88 अष्टशीतिः — 100000 — लक्षम
89. नवाशीतिः | ऊननवतिः | एकोननवतिः
90 नवतिः — 1000000 - नियुतम
91. एकनवतिः — 10000000 - कोटि
92 द्विनवति — 100000000 - दशकोटि, अर्बुदम्, वृन्दः
93 त्रिनवति — 1000000000 - दशार्बुदम्
94 चतुर्नवति — 10000000000 - खर्वः
95. पंचनवतिः
96. षण्णवतिः
97. सप्तनवतिः
98. अष्टनवतिः
99. नवनवतिः | अधशतम, एकोनशतम्
100. शतक | एक शतम
101. एकाधिक शतम्
102. द्वाधिक शतम
103. त्र्यधिक शतम
104. चतुराधिक शतम
105. पँचाधिक शतम
106. षडधिक शतम
107. सप्ताधिक शतम्
108. अष्टाधिक शतम
109. नवाधिक शतम्
110. दशाधिक शतम

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पूर्णवाचक संख्या शब्द

पहला - प्रथम:
दूसरा - द्वितीय:
तीसरा - तृतीय:
चौथा - चतुर्थ:
पाँचवा - पञ्चम:
छठा - षष्ठ:
सातवाँ - सप्तम:
आठवाँ - अष्टम:
नौवाँ - नवम:
दसवाँ - दशम:
ग्यारहवाँ - एकादश:
बारहवाँ - द्वादश:
तेरहवाँ - त्रयोदश:
चौदहवाँ - चतुर्दश:
पंद्रहवाँ - पञ्चदश:
सोलहवाँ - षोडश:
सत्रहवाँ सप्तदश:
अठारहवाँ - अष्टादश:
उन्नीसवाँ - ऊनविंश:
बीसवाँ - विंश:
तीसवाँ - त्रिंश:
चालीसवाँ - चत्वारिंश:
पचासवाँ - पञ्चाशः
सौवाँ - शततमः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वाच्यपरिवर्तनम्

वाक्य में क्रिया द्वारा प्रधान रूप से जो कहा जाता है वह क्रिया का वाच्य होता है अर्थात वाक्य निर्माण की शैली को वाच्य कहते हैं।

वाच्य के भेद ⇒

वाच्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं।

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

वाच्य परिवर्तन के नियम ⇒

(i) कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है। कर्ता के अनुसार ही क्रिया का पुरुष तथा वचन होता है।

वाच्यपरिवर्तनम्	कर्ता	कर्म	क्रिया
कर्तृवाच्ये	प्रथमा विभक्तिः	द्वितीय विभक्तिः	कर्त्रनुसारं (परस्मैपदी) वचन, पुरुष
कर्मवाच्ये	तृतीया विभक्तिः	प्रथमा विभक्तिः	कर्मानुसारं (आत्मनेपदी) लिंग, पुरुष, विभक्ति, वचन
भाववाच्ये	तृतीया विभक्तिः	प्रथमा विभक्तिः	(क) लकारेषु प्रथम पुरुष एकवचन आत्मनेपदी (ख) प्रत्ययस्य योगे – नपुंसकलिं ग प्रथमा विभक्ति एकवचन

(ii) कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। कर्म के अनुसार क्रिया का पुरुष तथा वचन आत्मनेपद में होते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(iii) भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। क्रिया हमेशा नपुंसकलिंग एकवचन या प्रथम पुरुष एकवचन आत्मनेपद में होती है।

कर्मवाच्य क्रिया बनाने की विधि ⇒

कर्मवाच्य क्रिया बनाने के लिये निम्नलिखित विधि—

① मूल धातु के बाद वर्ण 'य' लगाया जाता है।

② धातुओं में आत्मनेपद के रूप लगते हैं।

जैसे –

परस्मैपद	आत्मनेपद
लिखति	लिख्यते
पठति	पठ्यते
गच्छति	गम्यते
भक्षयति	भक्ष्यते

③ सभी लकारों में क्रमशः प्रथम पुरुष और एकवचन का ही प्रयोग किया जाता है।

④ ऋकारांत धातुओं के अंतिम 'ऋ' का 'रि' हो जाता है।
कृ – क्रि = क्रियते   मृ – म्रियते   भृ = भ्रियते

⑤ धातु में स्मृ तथा जागृ के अंतिम 'ऋ' का 'अर्' हो जाता है।
जैसे – स्मृ – स्मर्यते , जागृ = जागर्यते

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(6) वच्, वस्, वप्, स्वप्, वे के 'व' को 'उ' हो जाता है। यज् तथा व्यध् के 'य' को 'इ' और प्रच्छ तथा ग्रह के 'र' को 'ऋ' हो जाता है।

जैसे →
वच् - उच्यते
यज - इज्यते
वस - उष्यते
व्यध् - विध्यते

(7) धातु के अन्तिम 'इ' या 'उ' दीर्घ हो जाते हैं जैसे =
जि = जीयते
श्रु = श्रूयते
चि = चीयते
दु = दूयते

(8) आकारांत धातुओ के 'आ' का 'ई' हो जाता है जैसे =
दा = दीयते
पा = पीयते
स्था = स्थीयते

(9) धातु के अन्तिम अक्षर के पहले यदि कोई अनुनासिक (किसी वर्ग का पाँचवा वर्ण) हो, तो उसका लोप होता है।
जैसे = बन्ध = बध्यते
रञ्ज = रज्यते
मन्थ = मथ्यते

Toppersnotes
Unleash the topper in you

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन के नियम ⇒

① कर्तृवाच्य के 'कर्ता' की प्रथमा विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में बनाने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

② कर्तृवाच्य के 'कर्म' की द्वितीया विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में बनाने के लिये 'कर्ता' में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

③ कर्तृवाच्य में क्रिया का पुरुष, वचन, लिंग, विभक्ति, कर्म के पुरुष, लिंग, विभक्ति, वचन के अनुसार की जाता है।

④ कर्तृवाच्य के क्तवतु (तवत्) प्रत्यय के स्थान पर कर्मवाच्य में क्त (त) प्रत्यय की जाता है। जैसे—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः पाठं पठति।	रामेण पाठः पठ्यते
सः माम् पश्यति।	तेन अहम् दृश्ये।
त्वं पुष्पाणि चिनोषि।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।
सः किं कृतवान्?	तेन किं कृतम्?

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के नियम →

① कर्मवाच्य के कर्ता की तृतीया विभक्ति, कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति में बदल जाती है।

② कर्मवाच्य के कर्म की प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति में बदल जाती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

③ क्रिया के पुरुष व वचन कर्म के अनुसार न होकर कर्ता के अनुसार होते हैं।

④ कर्मवाच्य की आत्मनेपद की क्रिया परस्मैपद क्रिया में बदल जाती है। जैसे –

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
रामेण पाठः पठ्यते।	रामः पाठं पठति।
मया त्वं दृश्यते।	अहम् त्वां पश्यामि।
युष्माभिः पाठः पठ्यते।	यूयम् पाठं पठथ।

कर्तृवाच्य में भाववाच्य में परिवर्तन के नियम –

① भाववाच्य में प्रयुक्त होने वाली धातुओं के रूप कर्मवाच्य की क्रियाओं के समान ही होते हैं।

② भाववाच्य का कर्ता भी कर्मवाच्य के कर्ता के समान तृतीया विभक्ति में रखता है।

③ इस वाच्य की क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष एकवचन में ही रखती है।

④ जहाँ क्रिया की प्रधानता होती है, वहाँ भाववाच्य होता है।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
सः हसति।	तेन हस्यते।
सिंहः गर्जति।	सिंहेन गर्ज्यते।
नर्तकः मञ्चे नृत्यति।	नर्तकेण मञ्चे नृत्यते।

उपसर्ग प्रकरण

"उपसृज्यन्ते धातुनां समीपे क्रियन्ते इत्युपसर्गाः।"

सामान्यतः जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। परन्तु उपसर्गों से केवल क्रियाओं का ही निर्माण नहीं होता इससे अन्य शब्दों का निर्माण भी होता है।

जैसे → प्र + हृ (धातु) > प्रहरति (फेंकता है)

प्र + कारः (संज्ञा) > प्रकारः (भेद)

उपसर्गों का प्रयोग करते समय मूल शब्द का अर्थ प्रायः बदल जाता है।

"उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।"

(प्रकाराकार संहार विहार परिहारवत्)

संस्कृत में कुल २२ उपसर्ग हैं।

प्र = प्रभवति, प्रणयति, प्रसरति, प्रतिष्ठते

परा = पराभवति, पराजयते, पराकरोति, पलायते

अप = अपहरति, अपकरोति, अपदिशति, अपनयति

सम् = संगच्छते, संक्षिपति, संशेते

अनु = अनुभवति, अनुतिष्ठति, अनुवदति

अव = अवगच्छति, अवरीक्षित, अवतरित

निस् = निर्दिशति, निश्चिनोति

निर् = निरयति, निरीक्षते, निष्क्रामित